विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-१४/०९/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-दशम: पाठनाम जटायो: शौर्यम्

श्लोक१०.

संपरिजष्व वैदेहीं वामेनाङ्केन रावण:।

तलेनाभिजघानाशु जटायुं क्रोधमूर्च्छित:।।

अन्वय:-

(तत:)क्रोधमूर्च्छित: रावण: वैदेहीं वामेनाङ्केन संपरिष्वज्य

तलेन आशु जटायुं अभिजघान ।

शब्दार्था:-

संपरिष्वज्य -पकडकर , वैदेहीं - सीता को ,

वामेन - बाईं , अङ्केन - गोद में (से),

तलेन – मूंठ से , अभिजघान – प्रहार किया ,

आशु – शीघ्र (जल्दी) , क्रोधमूर्च्छित बहुत क्रोधित्।

अर्थ –

(तब)बहुत क्रोधित रावण ने अपनी बाईं गोद में सीता को पकड़कर

तलवार की मूंठ से शीघ्र ही जटायु पर घातक प्रहार किया ।